<u>What shall I write (3)?</u>

What shall I write?
Amidst the deep darkness around,
I was enjoying
The song of rain outside,
Sleeping peacefully inside the mosquito net,
I'm thinking now to write about the rain
Drizzling on the arum leaves,
Pitter patter raindrops on the shade of tin;

Or shall I write,
About Manu from Netaji Nagar Bus stand-
We knew him by "wheel crazy".
A torn half pant, without buttons,
Without zipper,
Tied around the waist with a rope-
Bare body.
Setting a wheel on a log,
Drives the wheel on the road for the whole day.
Ran off getting a five hundred rupee note on the road...
"Hey, did you leave the five hundred rupee note on the road?
Brother, I think you left a five hundred rupee note on the road..."
Finding the right person,
Returning the money,
He proceeds peacefully driving the wheel.
Right after two minutes, he is calling a pedestrian madam,
"Hey madam, will you give me ten bucks?
Please give, I've not eaten since morning!"
The madam bypassed him fast, covering her face.
What shall I write?

I'm thinking of writing about our house maid.
She's get out early for work
In Spite of the lockdown for Corona,
The female police asked her,
"Why have you got out ?"
"What shall I do Madam?

It's all for the empty stomach, the family can't survive."
The stick marks behind her hand, on her foot.
"What shall I do, master?
I'll die either in Corona, or in hunger,
Or due to the police baton!"

What shall I write?
Swapan da has lost his job.
He's started selling potatoes and eggs.
As I tried to bypass, he called me,
"What brother ? you don't want anything?
If you all don't buy, who else will, tell me?
"Wait I'm coming", I replied and fled the scene,
Somehow.

What shall I write?
It is raining profusely outside,
Pitter patter on the arum leaves,
It's raining on the lemon tree, shade of tin, banana leaves.
In every lanes and communities of India,
The poor cry profusely.
It's still raining pitter patter outside;
Sleeping alone in the deep darkness, I'm thinking,
What shall I write?

কি লিখব আমি (৩)?

কি লিখব আমি?
চারিদিকে ঘুঁটঘুটে অন্ধকার
আমারই দেশের নিশ্চিন্তে সুখে
আমি উপভোগ করছিলাম
যাদের অনেকের রুধির দান।
লিখব কেবল এ সুরে চেঁচচেঁচ করে-
রবি ঠাকুরে কণ্ঠবাজায়,
সংসারের করে রবি ঠাকুরে গানের তালে.....
নাকি লিখব —
মেহনতিদের - অসহায়দের - অন্নের কথা?
'চাষা বাঙালি' নামে জাতি আমরা ছিলে।
একটা মেরু খাদ্যাভাব, বোঝাও নেই
দিবাং নেই

(১০)

দড়ি দিয়ে বেঁধেছে ঝাঁপী,
খালি না।

একটা লাঠির মাথায় চাকা লাগিয়ে
সারাদিন রাস্তায় ধক্কা চালায়।
একটা বাঁকো চাকা কুড়িয়ে পেয়ে দৌড়ে আসল.....
"ও দাদা, কে চাকা খেলে চালাচ্ছিল,
ও দাদা বাঁকো চাকা খেলে চালাচ্ছিল......"
ঠিক লোকটিকে খুঁজে বের করে
চাকা ফেরত দিয়ে
নিশ্চিন্তে চাকা চালিয়ে খেলিয়ে চলেছে সে।
দু মিনিট বাদে নিমতলাতে এক আয়োজন দেখেছে
"ও আয়োজন দশ টাকা দিতে?
কেন দশটা টাকা, সকাল থেকে কিছু খাই নি!"

[illegible]
[illegible]

কি লিখছ তুমি?

[illegible]

[illegible]

কাজ করতে বেরিয়েছে সকাল সকাল,

[illegible] —

“বেরিয়েছেন কেন?”

“কি করব আমরা?

[illegible] সংসার চলে না।”

[illegible]

[illegible]

“দাদা বলো তো কি করি?

(12)

কড়োনায় মরব নয়তো অনাহারে মরবো

নয়তো পুলিশের লাঠির খোঁচাতে। ”
আঘাতে

কি লিখব আমি?

সুবিনদার চাকরি গেছে।

বাড়ির মোড়ে আলু পেঁয়াজ নিয়ে বসেছে।

পাশ কাটিয়ে যেই যাচ্ছি ..... সুবিনদার ডাক,

“কি রে? কিছু নিবি না?

তোমরা না নিলে কে নেবে বলো তো?”

“আসছি দাঁড়াও” বলে পালিয়ে গেলাম

সেলোঁকসে।

কি লিখব আমি?

রঙে আঁকার ছবি বাড়ি

টবে টবে ফুলে ফুলবাগান,

ছবির বাড়ি ভেঙে গেছে, টিনের চালে

কলাবাতায়ু।

মোংতেং নৈতেতি নলিতে মাহল্লায়ু
নিংতেং কাল্লা অতেং ও
বাহতেং এমনক্ত চৰচৰ হুপি পতেং ও
কি লিহ্ম তালিম
তানহ্ম একলা শতেং ধুচধুতে তানালতেং।

क्या लिखूं मैं ?(3)

क्या लिखूं मैं

चारो ओर घनघोर अँधेरा,

मैं मच्छरदानी के भीतर चैन से सोया हुआ,

आनंद ले रहा था,

बाहर निरंतर चलते बरसात के गीत।

सोच रहा हूँ अभी लिखूं कि,

जंगली पत्तों पे टिपटिप बरस रही हैं बरसात की बूंदे,

टिन के छत पर पानी बरसते हैं,झरझर झरझर। ..

या लिखूं,

नेताजीनगर बसस्टैंड वाले मनु की कहानी,

'चाका पगला' के नाम से हम जानते हैं उसे।

पहनावे में एक फटा हॉफपैंट, बटन नहीं है,जिपर   नहीं हैं ।

रस्सी से बंधा हुआ पैंट,और पूरा नंगा शरीर।

एक डंडे के ऊपर चक्के लगाए,

दिनभर राह में चक्के चलाता हैं।

पांचसौ रूपए का एक नोट मिलते ही भागने लगा,

"ओ भाईसाहब! ,कौन पांचसौ रूपए छोड़कर भाग रहे हैं?

ओ भाईसाहब पांचसौ रूपए छोड़कर भाग रहे हैं/…।

उस आदमी को ढूँढ़कर,रूपए उसे वापस कर,

चैन से चक्के चलाता हुआ आगे बढ़ता जाता है।

दो मिनट बाद ही,

राह चलती एक मैडम को पुकार रहा है ,

"ओ मैडम,दस रूपए दोगी ?

दो न दस ठो रूपए,सुबह से कुछ नहीं खाया …….।

मैडम कपड़े/रुमाल से नाक को ढकते हुए तेज़ रफ़्तार से आगे बढ़ जाती है।

क्या लिखूं मैं ?

सोच रहा हूँ अपने कामवाली मौसी की कहानी लिखूं।

कोरोनाकालीन लॉकडाउन में,

काम में जाने के लिए सुबह सुबह घर से निकली थी।

महिला पुलिस ने पूछा था

"क्यों निकली थी ?"

'क्या करूँ मैडम ?

इस पेट के लिए ,.....

मेरा तो घर ही नहीं चल रहा है । "

मौसी के हथेलिओं के पीछे,पैरों के ऊपर,

डंडे की निशानी।

"भाईसाहब !

बोलो तो क्या करूँ ?

"कोरोना से मरूँगी या अनाहार से मरूँगी ,

या मरूँगी पुलिस के डंडे की मार से।"

क्या लिखूं मैं?

स्वप्न भैया की नौकरी चली गयी है।

मोहल्ले के मोड़ पर अंडे और आलू लेकर बेचने बैठे हैं।

बगल से जैसे ही गुज़रा हूँ,..... स्वप्न भैया की पुकार !

"क्यों कुछ नहीं लोगे क्या ?

तुमलोग नहीं लोगे तो कौन लेगा ?

"आ रहे हैं रुको।" ..... कहकर किसी तरह भाग आया

क्या लिखूं मैं ?

बाहर जंगली पत्तों पर टिपटिप बूँदे गिरती ही जाती है ,
बूँदे गिरती हैं नीम्बू के पेड़ों पर,टीन के छतों पर ,केले के पत्तों पर,
भारत के हर मोहल्ले,हर गली में,
गरीब के आसूँ बरसते जाते हैं
बाहर अभी भी टिपटिप बरसती हैं बूँदें
घनघोर अँधेरे में अकेला सोता हुआ सोच रहा हूँ
क्या लिखूं मैं